अध्याय – 18
डेयरी एवं कुक्कुट प्रबन्धन
(Dairy & Poultry Management)

18.1. परिचय :

समुचित और उत्तम व्यवस्था के ऊपर ही डेयरी फार्म की सफलता निर्भर करती है, अतः व्यवस्था ऐसी हो, कि प्रजनन नियमित चलता रहे और पशुओं में सूखा काल कम से कम रहे। सूखा काल 60–90 दिन से अधिक न हो। कम दूध देने वाले जानवरों की छंटाई की जाती रहे। पशुओं के स्वास्थ्य का पूरा–पूरा ध्यान रखा जाए। पशु के लिए उपयुक्त घर बहुत आवश्यक है। व्यायाम भी उतना ही जरूरी है। आहार दाना उपयुक्त मात्रा में साल भर प्राप्त होता रहे और पशु का स्वास्थ्य बना रहे, यह पशु प्रबन्ध का प्रथम और सबसे आवश्यक पहलू है। बछड़ा पालन डेयरी फार्म का बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग है जिसका प्रबन्ध से सीधा संबंध है। यदि बछडा पालन का काम सुचारू रूप से चलता रहे तो भविष्य में फार्म के जानवरों की अदला बदली के लिए पशु आसानी से और उत्तम तरीके से प्राप्त होते रहते हैं। अतः प्रबन्ध वैज्ञानिक ढंग से किया जाना चाहिए।

18.2. पशु का रख रखाव :

पालतू पशुओं से अधिक लाभ पाने के लिए यह जरूरी है कि स्वास्थ्य के सिद्धान्तों को प्रयोग में लाकर उन्हें स्वस्थ रखा जाए। हमारे पशुओं को कृषि आदि के सिलसिले में कितना कठोर परिश्रम करना पड़ता है और उन्हें अप्राकृतिक परिस्थितियों में रहना पड़ता है। इसे देखते हुए इनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना और भी आवश्यक है। गाय का दूध उसके बछडे के लिये होता है। लेकिन नस्ल सुधार करके, बढ़िया खुराक देकर, गाय के दूध की क्षमता इतनी बढ़ा दी गई है कि, उसका दूध आज मानव भोजन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है। बनावटी तरीकों से इस तरह दूध देने से गाय के शरीर स्त्रोतों पर अधिक दबाव पड़ता है। यदि गाय का ठीक चुनाव नहीं होता, उसकी देखभाल नहीं की जाती, उसे साफ सुथरी खुली आरामदायक जगह में नहीं रखा जाना, उसे काफी बढ़िया खुराक नहीं देना, उसके पीने के लिए साफ पानी का उपलब्ध नहीं होता हैं, तो उसका स्वास्थ्य जल्दी ही गिर जाता है। अतः देखभाल व रख रखाव में बहुत ही धैर्य एवं सावधानी की आवश्यकता होती हैं।

18.2.1. पशुओं को खरेरा करना :

बैठने, उठने, इधर–उधर आने जाने पर पशुओं के शरीर पर मिट्टी, धूल या गन्दी चीजें लग जाती हैं। दूसरे पशुओं के सम्पर्क में आने पर बाह्य परजीवी जैसे : जुएँ आदि भी लग जाते हैं। अतः इन सबसे छुटकारा पाने के लिए पशु को दो तीन दिन के अन्तर से नियमित रूप से खरेरा किया जाना चाहिए।

18.2.2. सींग रहित करना :

डेयरी पशुओं के लिए सींग का कोई महत्व नहीं है। बल्कि इनसे पशु आपस में लडते रहते हैं और थन तथा आँखों जैसे नाजुक अंगों में चोट आ जाने की सम्भावना रहती है। इसलिए आरम्भ से ही इनसे छुटकारा पाया जा सकता है। सींग खत्म करने की कई विधियाँ प्रयोग में लाई जाती है। कुछ विधियाँ नीचे दी जा रही है :

(अ) कास्टिक छड़ी द्वारा :

इस विधि का प्रयोग छोटे बच्चों पर किया जाता है। यह विधि जन्म के 10–15 दिन के अन्दर प्रयोग में लाई जाती है। कास्टिक की बत्ती रगड़ कर सींग खत्म करने के लिए पहले सींग निकलने के स्थान के आस–पास के चारों ओर के बालों को हटाया जाता है। फिर किनारे पर चारों तरफ वैसलीन लगा दी जाती है। जिससे रगड़ते समय कास्टिक फैल न सके। अब बत्ती को कास्टिक में भिगोकर सींग के बटन पर रगड़ा जाता है। यह रगडाई तब तक की जाती है जब तक की वहां से खून न निकल आए। जब खून आ जाता है तो रगड़ना बन्द करके उस पर तारपीन या कोलतार का लेप कर देना चाहिए।

(ब) बिजली के यंत्र से :

यह यंत्र विशेष रूप से इसी काम के लिए होता है। बड़े फार्मों पर इसका प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग छोटे बच्चों के सींग खत्म करने के लिए किया जाता है।

(स) गरम लोहे अथवा आरी से :

इससे बड़े जानवरों के सींग काटे जाते हैं। जब छोटे पशु के सींग खत्म नहीं किए जाते तो बड़े होने पर उनको समाप्त करना आसान नहीं होता है। अतः सींग को आरी से काटते हैं या फिर धारदार लोहा गरम करके उसकी सहायता से सींग काटे जाते हैं।

18.2.3. पहचान के लिए चिह्न लगाना :

पशु की पहचान के लिए उस पर नम्बर डालना आवश्यक होता है। बहुत से डेयरी फार्मों पर अपने जानवरों का नाम रख देते है जिससे पहचानते हैं। परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि संख्या बहुत कम हो। बड़े फार्मों पर अंक डालना आवश्यक होता है। अंक डालने से पशु का पूर्ण अभिलेख रखने में सहायता मिलती है। नस्ल सुधार तथा निरन्तर सुधार के लिए अंक डालना आवश्यक होता है। अंक ऐसे होने चाहिए जो कि स्थाई हों।

स्थाई चिह्नों के लाभ :

1. प्रजनन, खिलाई, पिलाई तथा प्रबन्ध संबंधी सुविधाओं के लिए दूर से ही आसानी से दिखना आवश्यक है ताकि पहचान की जा सके।
2. पशु विशेष का अलग–अलग अभिलेख रखने में मदद।
3. शुद्व नस्ल के जानवर एक दूसरे से मिल नही पाएंगे। शुद्वता तथा नस्ल के विकास के लिए स्थाई पहचान चिह्न आवश्यक है।
4. पहचान चिह्न होने से बीमार पशु की पहचान आसानी से की जा सकती है।
5. पशु की चोरी नहीं हो सकती है। पता चल सकता है।
6. अधिक पशुओं का (200–5000 तक) बिना पहचान चिह्न के रख–रखाव संभव नहीं है।

पहचान चिन्ह बनाने की विधियाँ :

लगभग पिछले सौ वर्षो में 20 से भी अधिक विधियाँ अपनाई गई हैं। परन्तु उनमें से मुख्य कर्णटेग, गोदाई (गर्दन में) संस्था के टैग, नितम्बों पर दाग कर (गरम लोहे से) या फ्रीज ब्रैण्डिग। कान में गोदाई बच्चे के जन्म के बाद एक सप्ताह के अन्दर कर दी जाती है बाद में 6 माह की उम्र के बाद उसके नितम्बों पर लोहे के गरम अंकों से स्थाई निशान लगाये जाते है।

18.2.4. खुरों की छटाई :

खुर छँटाई की समस्या केवल उन्ही जानवरों की होती है जो पर्याप्त मात्रा मे चल फिर नही पाते है, और उनके खुर बढ़ जाते है। यह समस्या चारागाह मे चरने के लिए जाने वाले जानवारों के साथ कम होती है। अतः खुरों की छटाई की जानी चाहिए। क्योंकि खुरों के बढ़ जाने से जानवर को चलने फिरने मे कठिनाई होती है। इसके लिए तेज धार का विशेष प्रकार का चाकू प्रयोग मे लाया जाता है। खुरों के तली की भी छटाई की जानी चाहिए।

जल की व्यवस्था :

पशुओं के लिए पर्याप्त मात्रा मे शुद्ध और साफ पानी की व्यवस्था बहुत आवश्यक है। पानी का महत्व इस बात से और भी स्पष्ट हो जाता है कि पशु के शरीर में करीब 70 प्रतिशत भाग और उसके दूध में लगभग 87 प्रतिशत भाग केवल जल होता है। पानी शरीर के हर एक ऊतक का महत्वपूर्ण रचनाकारी तत्व है। इसे शरीर की रचना के लिए एक आश्वयक पदार्थ कहा जा सकता है। इसलिए जब भी जितनी मात्रा में पशुओं को पानी की जरूरत हो, उन्हें उसी समय पानी पिलाना चाहिए। पशुओं को पिलाया जाने वाला पानी साफ और शुद्ध होना चाहिए। दूसरे शब्दों मे वह निर्मल और रंगहीन होना चाहिए। उसमें कोई गंध और स्वाद नही होना चाहिए। पानी में कोई नशीली चीज या रोग पैदा करने वाले जीवाणु आंतो में रोग पैदा करने वाले अंडाणु या लार्वा और अन्य परजीवी नही होने चाहिए क्योकि ऐसा होने से पानी रोग का कारण बन जाता है। गन्दा पानी पीने से शरीर मे मौजूद रोगाणुओं को रोग फैलाने में मदद मिल जाती है। पशुओं में गिल्टी, छत का गर्भपात, अपच, गल–घोंटू, लंगड़ी आदि बीमारियां गंदे पानी से ही फैलती है।

18.3. नवजात बच्चों की देखभाल :

फार्म के पशुओं का भविष्य बछड़ों के वैज्ञानिक प्रजनन और पालन पोषण पर निर्भर करता है। डेयरी के लिए अच्छे पशु तैयार किए जाते हैं। गायें जिनकी खिलाई पिलाई और देखरेख अच्छी तरह हुई हो, आमतौर से मजबूत और सुविकसित बच्चों को जन्म देती हैं। परन्तु कमजोर और घटिया खुराक पर पाली गई गायें कमजोर और अस्वस्थ्य बच्चे पैदा करती हैं जिन्हे पालना बड़ा कठिन होता है। वास्तव में बछड़ो की देख–रेख और खिलाई–पिलाई उनके जन्म से ही शुरू हो जाती है।

जैसे ही बछड़ा पैदा हो उसकी नाक, आँख, कान और शरीर में लगी झिल्ली या दूसरी चिपकी हुई गन्दी चीजों को अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए ताकि वह अच्छी तरह सांस ले सके। आम तौर पर गाय स्वंय अपने बछड़े को चाट

कर साफ कर देती है। यदि गाय तुरन्त पैदा हुए अपने बछड़े को नही चाटती है तो उसके शरीर पर थोडा नमक छिड़क दिया जाए। इससे गाय बछड़े को चाटने लगेगी। यदि पैदा होने के तुरन्त बाद ही बछड़े को माँ से दूर हटा दिया जाता है और उसका दूध छुड़ा दिया जाता है तो ऐसी हालत में साफ–सुथरे पुआल या सूखे टाट (बोरी के टुकड़े से) से धीर धीरे रगड़ कर उसकी अच्छी सफाई कर देनी चाहिए। नवजात बछड़े को जिस जगह रखा जाए, वह जगह साफ सुथरी और हवादार हो। इसके साथ ही वहाँ पुआल की मोटी बिछोली बिछी हों। कभी कभी नवजात बछड़े मरे हुए से दिखते हैं। ऐसी हालत में धीरे से बछडे की जीभ जरा बाहर खींच कर, आगे के पैरों को आगे पीछे, धुमा कर और पुआल से उसके शरीर को धीरे धीरे सहला कर कृत्रिम ढंग से श्वास शुरू कराना चाहिए। बछडे की पिछली टांगें ऊपर करके, उसे लटका कर, उसके नाक के जरिए फूंक मार कर भी कृत्रिम रूप से श्वास प्रश्वास कराया जा सकता है। ऐसा करने से बछड़े में जीवन शक्ति आ जाती है और उसके कुछ खांसने या हाफंने से श्वास प्रश्वास अंगों के कार्य करने का संकेत मिलता है। यदि बछडा रोगी हो तो प्राकृतिक रंधों, खासकर गुदा द्वार की जांच की जानी चाहिए। अगर गुदा बन्द हो तो चीरा लगा कर उसको खोल देना चाहिए।

इसके बाद बछड़े की नाल या नाभि सूत्र पर ध्यान देना चाहिए, जिससें वह अपनी माँ से जुड़ा होता है। आमतौर से नाभि सुत्र अलग हुआ पाया जाता है। अगर वह अलग नहीं हो तो इसे काट कर अलग कर देना चाहिए।

अगर नाभि सूत्र को काटने और उसें रोगाणु रहित करने में उचित साक्धानी नही रखी जाती है तो उस कटे भाग पर शीघ्र ही घाव बन जाता है और इससे बछड़े को काफी तकलीफ होती है। अन्त में इससे उसके दस्त लगने लगते हैं। इससे बछड़ा बहुत कमजोर हो जाता है और मर भी सकता है।

इससे होने वाली हानि से बचने के लिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि कटे हुए नाल पर एन्टीसैप्टिक की पट्टी बाँध दें। केवल पट्टी बांध देनी ही पर्याप्त नहीं है इसे टिंचर में डुबा देने के बाद टिंचर आयोडीन मे भिगोया हुआ रूई का फोआ अन्दर डाल कर धागे से अच्छी तरह बांध दिया जाये। धीरे धीरे घाव सूख जाने पर नाल का टुकड़ा फोआ के साथ गिर जाएगा और घाव ठीक हो जाएगा। बछड़े को जन्म से 2 घंटे के अन्दर उसकी माँ का खीस पिलाना अत्यंत आवश्यक है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि भैसों के बच्चें अधिक संख्या में मर जाते हैं ऐसा इसलिए होता है कि उनमें सूक्ष्म विषाणुओं से लड़ने की क्षमता कम होती है। लेकिन पर्याप्त मात्रा मे दूध पिला कर तथा उचित देखभाल द्वारा उनकी मृत्यु दर घटाकर 5 प्रतिशत तक की जा सकती है।

18.4. सूखी गाय की देख रेख :

अक्सर ऐसा देखा गया है कि जानवर की तभी तक सेवा करते है जब तक कि दूध देता रहता है। जब दूध देना बंद कर देता है तो उसे उचित और संतुलित खुराक नहीं दिया जाता है। परन्तु ऐसा करना पशु की प्रजनन क्षमता तथा उत्पादन क्षमता के लिए हानिकारक सिद्ध होता है। जब गाय भैस दूध नहीं देती हो, तो उसे इतना चारा, दाना आवश्यक दिया जाए जिससे कि वह स्वस्थ रह सके और दूसरे ब्यांत में उत्पादन भी बनाए रख सके। खिलाई पिलाई वैज्ञानिक ढंग से की जानी चाहिये।

18.5. ग्याभिन गाय की देखभाल :

1. गर्भिणी के साथ नम्रता का व्यवहार किया जाए। मारा, पीटा या डराया न जाए अन्यथा गर्भपात होने की संभावना रहती है।
2. ब्यानें से 6 सप्ताह पूर्व दूध निकालना बंद कर दे। ऐसा करने से पशु के दूसरे ब्यांत पर बुरा असर नही पड़ेगा।
3. ग्याभिन पशु को अधिक लम्बा सफर तथा तेज नहीं चलाना चाहिए। उसे अन्य पशुओं से अलग रखा जाए।
4. ग्याभिन गाय को उन पशुओं के साथ नहीं रखे, जिसका एक बार गर्भपात हो गया हो। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है।
5. ब्याने से एक सप्ताह पूर्व से ही सभी पशुओं से अलग, प्रसूति गृह (कार्विंग पेन) मे रखा जाए।
6. पशु को हल्की और आसानी से पचने वाली खुराक दी जाए (खिलाई प्रकरण)
7. ग्याभिन पशु के लिए खनिज लवण की ईटं रखी जाए ताकि वह जब जरूरत समझे चाट सके।

8. स्वच्छ पुआल का बिछावन गाभिन पशु के लिए आवश्यक होता है।

18.6. प्रसव के समय देखभाल :

चुस्त और चौकस पशु पालक को यह पता होता है कि उसकी गाय कब ब्याने वाली है। उसके लिए गाय का ब्याना कोई अप्रत्याशित घटना नहीं है। बल्कि इस प्रकार उसे अनुभव होता रहता है और वह अपने अनुभव में संशोधन करता रहता है। पशुपालक का उस समय वहाँ पर उपस्थित रहना उचित है। यदि पशुपालक उपस्थित रहेगा तो उससे नीचे लिखी बातें आसान होगी :

1. बच्चे की पैदाइश शीघ्र होती है।
2. यदि बच्चे की श्वसन प्रक्रिया खराब हो तो उसे उल्टा करके लटका दे ताकि अन्दर से गन्द निकल जाए और सांस ठीक से चलने लगे। यदि आवश्यक हो तो नाक के रास्तें फूंक मार कर प्रश्वास जागृत किया जा सकता है।
3. प्रसूति ज्वर, नेकीटोसिस और अन्य उपापचयी सम्बन्धी बीमारियों का ध्यान रखना।
4. क्या जेर/नाल जल्दी गिर जाती है। इसको नोट करना आवश्यक होता है।
5. यदि आवश्यकता महसूस करें, तो पशु चिकित्सक को बुलवाना।
6. जब गाय खाने की इच्छा व्यक्त करे, तो चारा उपलब्ध करवाना।
7. गर्भाशय को कम से कम क्षति हो।
8. यदि इस प्रकार की व्यवस्था हो तो 95–98 प्रतिशत बछडियां जीवित रह कर गाय बनती है।

यदि पशु पालक ऊपर बताए गए कार्यों को ठीक ढ़ंग से करता रहे तो वह अन्य कार्य भी आसानी से पूरे कर सकता है। इससे उसे लाभ की सम्भावनाऐं अधिक रहती है।

18.7. मदकाल में गाय की देख रेख :

मद चक्र में आई सभी गायों तथा औसरों को अन्दर कमरे में रखा जाए। खाने पीने की पूरी व्यवस्था वही कर दी जाए। मदकाल में आने की तारीखों का तथा गर्भधारण का पूरा अभिलेख रखा जाए। इस विषय मे किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं रखी जाए। इससे प्रजनन के प्रबन्ध में बहुत सहायता मिलती है।

गर्भावधि :

गाय के पेट में बच्चे का काल लगभग 280 दिन होता है। परन्तु कुछ गायों का गर्भकाल 280 दिन से थोडा अधिक या कम हो सकता है। अतः 283 दिन गर्भावधि को ध्यान में रखकर, इसकी सहायता से गर्भाधान की तारीख से ब्याने के दिन का हिसाब लगाया जा सकता है।

18.8. औसरों को प्रशिक्षण देना :

औसरों को यदि दूध निकालने का प्रशिक्षण नहीं दिया जाए, तो पहले ब्यांत में काफी कठिनाई हो सकती है। अतः दूसरी गायों के साथ औसरों को भी दूध निकालने के बाड़े में समय से लाया जाए तथा दाना, घास दिया जाये। उनके पैरों को रस्सी से बांधा जाए और उनके थनों को हाथ लगाकर सहलाया जाए, ताकि उन्हें आदत पड़ जाए। ऐसा करने से ओसर जब ब्यायेगी, तो कोई भी व्यक्ति उसकी देखभाल कर सकता है।

18.9. डेयरी पशुओं का चयन :

डेयरी उद्योग से लाभ कमाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्नत तथा उत्तम नस्ल का पशु का चुनाव किया जावे। चुनाव करने के लिए दोनों तरीकों को अपनाना चाहिए।

(अ) वंशावली के आधार पर
(ब) बाहरी लक्षणों के आधार पर

(अ) वंशावली के आधार पर चयन :

यदि किसी बछिया की मां ने अपने ब्यांत काल में अधिक दूध दिया है और उसे किसी ऐसे सांड से गर्भित करवाया गया है जिसकी मां अधिक दूध देने वाली है, तो यह निश्चित है कि उसकी संतानें भी अधिक दूध देने वाली होगी। अतः डेरी पशुओं का चुनाव करते समय उनकी वंश परम्परा का रिकार्ड तथा दूध उत्पादन को ध्यान में रखा जाए।

(ब) बाह्य लक्षणों के आधार पर चुनाव :

डेयरी के लिए गाय को खरीदते समय यदि निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाए, तो बहुत सम्भव है कि उत्तम पशु का चुनाव किया जा सकता है :

1. गाय देखने में आकर्षक लगे, उसमे ओज हो तथा मादा के गुण स्पष्ट हो।

2. शरीर के सभी अंग प्रत्यंग सुडौल, सुदृढ तथा सुन्दर हो। गठन अच्छा हो।
3. सिर मध्यम आकार का हो, थूथनी चौड़ी तथा बड़ी हो।
4. नासिकों के द्वार खुले हों, जबड़े पतले तथा मजबूत हों, आँखे उभरी तथा चमकदार हो, माथा चौड़ा तथा दोनो आंखों के बीच में हों तथा थोड़ा तस्तरी के आकार का हो, कान मध्यम दर्जे के तथा चौकन्ने हों।
5. पीठ समतल तथा मजबूत हो।
6. कंधे ठीक प्रकार से जुड़े हुए हो।
7. पुट्ठें लम्बे व चौड़े हों।
8. नितम्ब चौडे हों।
9. पूंछ लम्बी तथा गुच्छेदार हो।
10. आगे की टांगे चौड़ी तथा सीधी हो।
11. पीछे की टांगे काफी चौड़ी हों जिससे उनके बीच मे अयन के विस्तार के लिए काफी स्थान हो।
12. गर्दन लम्बी तथा सुदृढ हो।
13. पसलियाँ फैलावदार तथा चौड़ी और लम्बी हों।
14. कोख गहरी तथा मेहरावदार हो।
15. शरीर की चमड़ी मुलायम तथा चमकीली हो।
16. अयन छूने पर मुलायम लचीला हो तथा दूहने के बाद सिकुड़ जाता हो।
17. चारों थन एक समान हों तथा लम्बे हों और गोल बेलनाकार हों, उनकी दूरी एक दूसरे के समान हों।
18. दूध शिराए स्पष्ट हो टेढ़ी मेढ़ी तथा शाखादार हो।

18.10. मुर्गियों में छँटनी

18.10.1. मुर्गियों के छँटनी के प्रमुख कारण :

मुर्गियों में छटनी करना, अच्छी पैदावार लेने के लिए आवश्यक माना गया है अतः इन बिन्दुओं को आधार मानकर इनकी छटनी की जाती है :

(अ) जिस प्रजनन झुंड से मुर्गियाँ लेते हैं वह वंशागत दृष्टि से अच्छा न हों।

(ब) उनको सन्तुलित एवं पूर्ण आहार नहीं दिया जा रहा हो।

(स) प्रबन्धन अच्छा नहीं होने पर।

अतः वर्धन मुर्गियों में समय–समय पर छँटनी अवश्य करनी चाहिए क्योंकि इससे निम्नलिखित लाभ है :

(अ) आहार की बचत।

(ब) बीमारीयों के फैलने पर रोकथाम।

(स) झुण्ड में समानता जो चूजे नाटे कद के रह जाते हैं, वे अपना पूर्ण आहार नहीं ले पाते। अतः जितने समय तक इस प्रकार के चूजे फार्म पर रहते हैं यह सब आहार को बर्बाद ही करते हैं। इस प्रकार के बीमार चूजों से स्वस्थ चूजों को बीमारी लगने का पूरा डर रहता है। अतः इस प्रकार के चूजों को जितना जल्दी हो सके, झुण्ड से छंटनी कर देनी चाहिए।

18.10.2. चूजों की छँटनी के प्रमुख कारण :

(अ) औज की कमी होने पर छँटनी :

जो चूजे बीमार हों अथवा ओजस्वी न हों, उनकी देखते ही छँटनी कर देनी चाहिए। औज की कमी से चूजों में अनेक लक्षण जैसे : विधुतहीनता भवन के किसी एक कोने में एकत्र होना, ठण्ड महसूस करना और बीमार दिखाई देना, पंख लटके हुए, जो बीमार होने के प्रमुख लक्षण है। पंखों की चमक समाप्त होना भी बीमारी का लक्षण है। विधुतहीन और अन्दर धसी हुई आँखे वंशागत औज की कमी के लक्षण है। जिन चूजों की आँखे धूसर अथवा मोक्तिक होती हैं उनको संक्रामक बीमारी के जीवाणुओं का केन्द्र समझना चाहिए।

(ब) अच्छे पंख न होने पर छँटनी :

साधारणतया वर्धन चूजों के झुण्ड में कुछ पंख 6 से 8 सप्ताह की आयु तक अच्छे नहीं होते हैं। इसका कारण झुण्ड में भीड होना अथवा असन्तुलित आहार का मिलना है वैसे वंशागत लक्षण भी हो सकते हैं। जिन मुर्गियों के पंख अच्छे न हो उनको प्रजनन कार्यो में नहीं लेना चाहिए और उनको 10–12

सप्ताह की आयु पर खाद्य के लिए प्रयोग कर लेना चाहिए।

(स) शरीर का खराब आकार एवं माँसल होने पर छँटनी :

शरीर उचित अनुपात में होना चाहिए जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और गहराई काफी हो। कील पीठ के समान्तर होनी चाहिए ताकि शरीर की गहराई आगे से पीछे तक एक हो। जिन के पैर लम्बे, संकरे, शरीर घुमावदार घुटना लटकते हुए, झुकी हुई छाती और खराब पूँछ हो, मुर्गियों की तुरन्त छँटनी कर देनी चाहिए। खाद्य के लिए पाली गई मुर्गियों की छाती व जांघो पर गोस्त होना महत्वपूर्ण है। गोस्त की मात्रा मुर्गियों के प्रजनन, आहार की मात्रा और प्रबन्ध की विधियों से प्रभावित होती है। झुण्ड में भीड़, आंतरिक परजीवी और बीमारी के कारण मुर्गियों की शारीरिक वृद्धि एवं शरीर पर गोस्त की आवश्यक मात्रा में वृद्धि नहीं होने देतें। अतः इस प्रकार मुर्गियों की छँटनी कर देनी चाहिए।

तेजी से वृद्धि करने वाले पठोरों एवं चूजों पर पादांगुली पंखो अथवा पैरों पर चिन्ह लगा देने चाहिए। जिससे कि उनको प्रजनन के लिए रखा जा सकता है। जबकि अतिरिक्त पठारों एवं चूजों की छंटनी समय पर करते हैं।

(द) भवन प्रवेश के समय पठोरों की छँटनी :

पठोरों को अण्डा देने से लगभग 1 माह पहले अण्डा देने वाले भवन में रखना आरम्भ कर देना चाहिए। लैगहार्न पठोर लगभग 150 दिन की आयु में तथा सामान्य नस्ल 170 दिन की आयु में अण्डे देना आरम्भ कर देती है। अतः उन्हें अण्डा देने वाले भवन में प्रवेश कराने से पहले उनका परीक्षण अच्छी तरह से कर लेना चाहिए, जिससे उनकी कमी का पता लग जाये। यदि पहले वर्ष अण्डों की अच्छी उपज नहीं रहती है तो उनकी छंटनी कर देनी चाहिए। अच्छे अण्डे देने वाली पठोर ओजस्वी होने चाहिए। ओज के निम्न लक्षण पठोर में पाये जाने चाहिए : चमकीली एवं उभरी आँखे, चौड़ा सिर, मजबूत चोंच, पीली व चमकीली पिंडली, चमकीले पंख अच्छा शरीर आदि।

(य) अण्डे देने वाले झुण्ड की छँटनी :

कम अथवा बिल्कुल अण्डे न देने वाली मुर्गियों की झुण्ड से छँटनी एक लगातार कार्यक्रम है। अण्डे देने वाले झुण्ड से इस प्रकार की बेकार मुर्गियों को छाँटना अच्छे प्रबन्ध की पहचान है। इस प्रकार की मुर्गियों से फार्म पर हानि होती है। अतः उनका पता लगते ही झुण्ड से तुरन्त निकाल देना चाहियें क्योंकि किसी झुण्ड से आर्थिक लाभ उससे प्राप्त अण्डों की संख्या पर ही आधारित होता है। जब अण्डों की उपज बढ़ती है और देखभाल एवं आहार व्यय उतना ही रहता है तो लाभ बढ़ता है परन्तु उपरोक्त खर्च के मद उतने ही रहने पर जब अण्डों की उपज घटती है तो लाभ भी घटता है । इसी प्रकार अनुपजाऊ मुर्गियों की संख्या झुण्ड में बढ़ती रहे तो लाभ के स्थान पर हानि होगी। अतः कम अण्डे देने वाली मुर्गी की तुरन्त छँटनी कर देनी चाहिए।

18.10.3. अण्डे नहीं देने वाली मुर्गियों की छँटनी :

कुछ अभ्यासों के बाद ही अण्डे देने वाली और अण्डे नहीं देने वाली को पहचानना आसान हो जाता है। यह पहचान मुर्गी के निम्न लिखित अवयवों को देखकर जल्दी की जा सकती है।

(अ) कलंगी :

अण्डे देने वाली मुर्गी के कलंगी गलचर्म, पूर्ण विकसित, चमकीले, सुर्ख और देखने में मोमी होते हैं। जबकि अण्डे नहीं देने वाली मुर्गियों की कलंगी एवं गलचर्म, ठंडे रंग में फीके और सिकुड़े हुए होते हैं।

(ब) जघन हड्डी :

अण्डे देने वाली मुर्गी की दोनों जघन की हड़ियाँ शरीर के साथ वैन्ट की तरफ बढ़ी हुई होती है। उन दोनों के बीच में काफी स्थान होता है जिसमें दो–तीन अंगुली आसानी से रखी जा सकती हैं। कुछ समय अण्डे देने के बाद में हड़ियाँ पतली एवं मुलायम हो जाती हैं जबकि अण्डे नहीं देने वाली मुर्गी की जघन हड्डियों के बीच में मुश्किल से एक अंगुली रखी जा सकती है।

(स) निकास :

अण्डे देने वाली मुर्गी का निकास अण्डाकार, मुलायम और नम होता है जबकि अण्डे न देने वाली मुर्गी का निकास छोटा, गोल शुष्क और झुर्रीदार होता है।

(द) उदर :

अण्डे देने वाली मुर्गी का उदर मुलायम और कुछ बड़ा होता है। ताकि अण्डें बनने वाले अवयवों को काफी स्थान मिल सकें। उदर की त्वचा मुलायम एवं चिकनी होती है। जघन की हड्डी के अन्तिम सिरे और कील हड्डी के अन्तिम सिरे के बीच में 3–4 अंगुली रखी जा सकती हैं। अण्डें न देने वाली मुर्गी का उदर संकीर्ण, त्वचा मोटी एवं भद्दी होती है। जघन की हड्डी के अन्तिम सिरे और कील हड्डी के अन्तिम सिरे के बीच में मुश्किल से एक अंगुली रखी जा सकती है।

(य) दशा :

एक स्वस्थ मुर्गी माँसल पंख कसे हुए, पूंछ और पंख कसी एवं उठी हुई और आकृति चमकीली एवं चंचल होती है। मुर्गी का सिर उसकी सर्वोत्तम भौतिक दशा का सर्वोतम सूचक है। जिन मुर्गियों की चोंच एवं सिर संकरे भद्दे एवं स्थूल होते हैं अच्छे अण्डे देने वाली नहीं होती हैं। अच्छी दशा न होना और अस्वस्थता का पता आँखों और कलंगी से चल जाता है। एक स्वस्थ मुर्गी की कलंगी और गलचर्म गहरी सुर्ख होती है, आंखे साफ एवं उभरी हुई और चोंच छोटी व मजबूत होती है। जिन मुर्गियों की कलगीं फीके रंग की नील लोहित खोखली अथवा मन्द क्रॉन्ति की होती है, क्षीण चेहरा, ऊपर वाली चोंच लम्बी आगे निकली होती है, सकरी छाती, पूंछ और पर नीचे लटकते हुए चर्बीली और शरीर स्थूल हो उनकी तुरन्त छंटनी कर देनी चाहिए। कलंगी लटकती हुई ऐठी हुई, अंगूठे के निशान वाली, केन्द्र में खोखलीं, किनारे फटे हुए एवं असमान, उन पर दाँत से कटे हुए हों तो ऐसे नरों की तुरन्त छँटनी कर देनी चाहिए। अर्थात् कभी भी प्रजनन के कार्यो में नहीं लेना चाहिए।

(र) प्रजनन वार्षिक निर्मोक समय एवं अवधि :

प्राकृतिक तौर से मुर्गी प्रति वर्ष पुरानी पंखों को उतार देती हैं और उनके स्थान पर नये पंख आते हैं। शरीर की इस क्रियात्मक क्रिया को निर्मोचन कहते हैं। साधारण परिस्थितियों में एक औसतन रूप से अण्डे देने वाली मुर्गी प्रथम बार अंडे देने के बाद ही वार्षिक निर्मोचन करती है। प्रथम वार्षिक निर्मोचन का समय एवं अवधि अच्छे अंडे न देने वाली मुर्गी की अपेक्षा अच्छे अण्डे देने वाली मुर्गी की पहचान करने का एक बहुत महत्वपूर्ण लक्षण है। जो मुर्गी अच्छे अण्डे देने वाली नहीं होती है। वह बहुत जल्दी निर्मोचन करती हैं। सर्वोत्तम अण्डे देने वाली मुर्गी अपने प्रथम अण्डे देने वाले वर्ष के अन्त में शरद ऋतु उतरने पर निर्मोचन करती हैं, निर्मोचन अवधि में अण्डे देती रहती है, संक्षिप्त में यह कह सकते हैं कि अच्छी मुर्गी अण्डे देने में दीर्घ स्थायी और निर्मोचन विलम्ब एवं शीघ्र करती है। जबकि अच्छे अण्डे न देने वाली मुर्गियां गर्मियों में निर्मोचन करती है और काफी दिनों तक निर्मोचन में ही रहती है जो मुर्गियां सितम्बर तक निर्मोचन के निकट जाती है उनको शीघ्र निर्मोचन करने वाली कहते हैं जो अक्टूबर से नवम्बर तक करती हैं उनको विलम्ब निर्मोचन करने वाली एवं दिसम्बर तक करने वाली को अतिविलम्ब निर्मोचन करने वाली मुर्गियां कहलाती है।

(ल) पीत मांसल नस्ल में वर्णकता :

सभी पीत त्वचा नस्लों की चोंच, पिंडली, पादांगुली, निकास, और निर्गम द्वारक में पीत रंग की अधिकता होती है। यह पीत रंग मुर्गी के आहार में आता है जिसको की वे खाती है। जब मुर्गी अण्डे देना आरम्भ करती है तो वह पीत रंग उनके शरीर के उपरोक्त अवयवों के बजाय अण्डे के पीतक में चला जाता है जैसे–जैसे मुर्गी अंडे देती जाती है तो उन अवयवों का यह पीत रंग उडता जाता है और तब तक दोबारा यह रंग नहीं आता जब तक कि मुर्गी अण्डे देना बन्द नहीं कर देती।

पीत त्वचा नस्ल में इस पीत की कमी अच्छे अण्डे एवं लगातार अण्डे देने का सूचक है। जिन आहारों में काफी मात्रा में पीत रंग वर्णपीत होता है जैसे की पीली मक्का और हरे चारे आदि मुर्गी को अधिक पीत वर्ण देते हैं अपेक्षाकृत ऐसे चारों के जिनमें कि

वर्णपीत की कमी होती है जैसे गेहूँ, जौ, चावल और दूध। अतः पीत रंग के आधार पर अच्छे एवं लगातार अण्डे देने वाली मुर्गी का चुनाव करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि मुर्गी को कैसा आहार दिया जा रहा है।

(द) लैंगिक परिपक्वता की दर :

जल्दी लैंगिक परिपक्वता और अण्डों की उपज आपस में सम्बन्धित है जो मुर्गी पूर्ण रूप से प्रोढ़ होने से पहले ही अण्डे देने लग जाती है वह पूरी तरह शरद् ऋतु में अण्डे नहीं दे पाती है तथा अण्डों का आकार भी छोटा रहता है। इस प्रकार जल्दी परिपक्वता के कारण शरीर भारी हो जाता है यदि ऐसा नही है तो ऐसी मुर्गियों की छँटनी कर, अलग कर देना ही बेहतर रहता है।

सारांश

पशुओं से आर्थिक लाभ लेने के लिए अच्छा प्रबन्ध आवश्यक होता है। इसमें अच्छी नस्ल का चयन, इनका रख रखाव, समय–समय पर खरेरा करना, सींग रहित करना, पहचान के चिह्नित करना, खुरों की छँटाई करना, नवजात बच्चों की खिलाई का ध्यान रखना आदि पर ध्यान दिया जाता है। अच्छे प्रबन्ध के लिए अच्छे जानवरों का चयन करना तथा उनके खाने पीने पर ध्यान देना ही अच्छा प्रबन्ध माना जाता है।

प्रश्न :

1. खुरों की छँटाई की जाती है :
   (अ) बन्धे हुए पशुओं में
   (ब) खुले जंगल में घुमने वालों में
   (स) खुले बाड़े में रखने वालों में
   (द) किसी में भी नहीं
2. बच्चे के जन्म के तुरन्त बाद खीस पिलाना चाहिए :
   (अ) एक घंटे बाद
   (ब) दो घण्टे बाद
   (स) 3 घण्टे बाद
   (द) 4 घण्टे बाद
3. गाय में गर्भावधि काल होता है :
   (अ) 270 दिन
   (ब) 283 दिन
   (स) 300 दिन
   (द) 320 दिन
4. मुर्गियों में निर्मोचन समय होता है :
   (अ) शरद ऋतु के बाद
   (ब) वर्षा ऋतु में
   (स) ग्रीष्म ऋतु के बाद
   (द) कोई नहीं।
5. मुर्गियों में छँटनी करना क्यों आवश्यक है लिखिए।
6. मुर्गियों में छँटनी के समय किन–किन बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक समझा गया है? बतलाइए।
7. ग्याभिन गायों के ब्यातें समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।
8. प्रबन्धन का क्या महत्त्व है? समझाइयें।
9. मुर्गियों में तथा पशुओं में प्रबन्धन किस–किस तरह से किया जाता है? विस्तारपूर्वक समझाइये।